हिन्दी विभाग
त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर-799022

अयोध्या शोध संस्थान, उत्तर प्रदेश एवं वाणी फाउंडेशन, दिल्ली के आर्थिक सहयोग एवं हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय, दीफू परिसर के सक्रिय सहयोग से दिनांक 08 से 10 अप्रेल 2020 को 'पूर्वोत्तर भारत में रामकथा' विषय पर प्रस्तावित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

पूर्वोत्तर भारत में रामकथा

(The Tradition of Ramkatha in North-East India)

तिथि- 08-10 अप्रैल, 2020

जैसा कि हम जानते हैं, रामकथा की शुरुआत आदिकवि वाल्मीकि से होती है। उनके द्वारा विरचित रामायण की विशिष्टता यह है कि रामकथा न केवल देश-विदेश की अनेक भाषाओं के साहित्य की विभिन्न विधाओं में तीन सौ से भी अधिक मौलिक रचनाओं का उपजीव्य बनी, वरन इसने भारत और एशिया समेत अनेक देशों के नाट्य, संगीत, मूर्ति तथा चित्र कलाओं को प्रभावित किया है। रामायण का आदि रचनाकार एक महान अभियंता की तरह अपने महाकाव्य का इतना भव्य और सुदृढ़ महल खड़ा करता है कि कालांतर में उस पर मंजिल पर मंजिल बनती जाती हैं, फिर भी न तो कभी उसकी नींव खिसकती है और न बड़ा से बड़ा भूकंप उसे हिला पाता है। देशी-विदेशी साहित्यकारों ने मूल कथा के इर्द-गिर्द उपकथाओं के इतने परकोटे खड़े कर दिये कि कोई भी आक्रमणकारी उसके अंदर प्रवेश कर उस अद्वितीय भवन को क्षतिग्रस्त नहीं कर सका।

रामकथा का रचनात्मक स्वरूप इतना अनूठा, सशक्त और जीवंत है कि अन्य कोई कथा उसे पचा नहीं पायी, उल्टे उसके आख्यान और उपाख्यान बन कर रह गये। उसकी विशिष्टता वस्तुत: उसके स्वरुप के लचीलेपन में समाहित है। देश-काल के परिवर्तन के साथ राम कथा के अंतर्गत भी बदलाव आता गया। देशी-विदेशी साहित्य सर्जकों ने इसे अपने-अपने ढंग से सजाया संवारा। रामकथा जहाँ कहीं भी गयी, वहाँ के हवा-पानी में घुल-मिल गयी, किंतु अनगिनत परिवर्तनों के बीच भी उसकी सर्वोच्चता ज्यों की त्यों बनी रही, अनेक शिखरों वाले धवल-उज्जवल हिमालय की तरह जिसका रंग सुबह से शाम तक बार-बार बदलता है, फिर भी उसके मूल स्वरुप में कोई बदलाव होता नहीं दीखता। संभवत: इसी कारण रामकथा पर आधारित जितनी मौलिक कृतियों का सृजन हुआ, संसार के किसी भी अन्य कथा को वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। रामचरित अनेक देशों के प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक आदर्शों के अनुरुप ढलता-सँवरता रहा। रामकथा पर आधारित विदशी कृतियाँ विविधता और विचित्रम से परिपूर्ण है।

वाल्मीकि से प्रेरित और प्रभावित होकर भारत और एशिया समेत दुनिया भर की विभिन्न भाषाओं, जीवन, और कलाओं में रामकथा के रूपांतर मिलते हैं। इंडोनेशिया, कंपूचिया, थाइलैंड, लाओस, श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया की चित्रकला और मूर्तिकला पर रामकथा के दृष्टांत मिलते हैं। मॉरीशस में हमारे पूर्वजों को काले पानी की सजा मिली थी तो दिनभर जीत और परिश्रम के बाद शाम को राम~कथा (रामायण) ही उनको राहत देती थी तथा हताशा और अवसाद से उबारती थी। यह उनकी संजीवनी थी। मानसिक और आर्थिक साम्राज्यवाद से निपटने के लिए आज इस संजीवनी कथा को पुनर्जीवित करने की जरूरत है और चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से लोगों के मानस की देहरी पर राम नाम रूपी दीपक को प्रतिष्ठित करने की महती आवश्यकता है। इस क्रम में पूर्वोत्तर भारत में खासकर त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि जैसे राज्यों में रामकथा के सूत्रों, राम की उपस्थिति एवं अवस्थिति को खोजे जाने की जरूरत है। हमने देखा है कि देश और विदेश के कई भागों में, एशिया के अनेक देशों में रामकथा पर अनेक कार्यशालाएँ और संगोष्ठियां हो रही हैं। पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। चूंकि हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम के अलावा पूर्वोत्तर भारत में इस विषय पर आज तक कोई संगोष्ठी/कार्यशालाएँ नहीं की गई है। बस इसी को ध्यान में रखकर हमने सोचा कि पूर्वोत्तर भारत में राम की उपस्थिति कैसी है, इस पर चिंतन-मनन होना चाहिए।

उक्त उद्देश्य के विचारार्थ त्रिपुरा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग, अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश एवं वाणी फाउंडेशन, दिल्ली की आर्थिक मदद और हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय, दीफू कैम्पस, असम के सक्रिय सहयोग से **'पूर्वोत्तर भारत में रामकथा' (Ramkatha in North-East India (in special reference to Tripura)** विषय पर दिनांक 08-10 अप्रैल, 2020 को एक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है।

इस त्रि-दिवसीय संगोष्ठी का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब यहाँ आए देश-भर के प्रतिभागी त्रिपुरा, पूर्वोत्तर और देश के विभिन्न हिस्सों से आकर यहाँ के जीवन, साहित्य, कलाओं, इतिहास में राम की उपस्थिति एवं अवस्थिति पर खुलकर विमर्श करें। तीन दिन की यह संगोष्ठी का उद्घाटन त्रिपुरा विश्वविद्यालय में किया जाएगा, इसके बाद दूसरे दिन स्थापत्य और कला की दृष्टि से यहाँ के ऐतिहासिक स्थान उनाकोटि में संगोष्ठी की जाएगी, और अंतत: समापन पुन: त्रिपुरा विश्वविद्यालय के सभागार में किया जाएगा। इसे ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत संगोष्ठी को निम्न संभावित उप-शीर्षकों में बाँटा गया है-

1. **पूर्वोत्तर भारत के लोक एवं जनश्रुति में राम[1]**
2. **पूर्वोत्तर भारत के पुरालेखों एवं इतिहास में राम**
3. **पूर्वोत्तर भारत से संबंधित लिखित साहित्य में रामकथा**
4. **पूर्वोत्तर भारत से संबंधित मौखिक साहित्य एवं जीवन में रामकथा**
5. **पूर्वोत्तर भारत से संबंधित चित्रकला एवं स्थापत्य में राम**
6. **पूर्वोत्तर भारत में रामकथा एवं कला का महत्व**

[1]**पूर्वोत्तर भारत** के प्रत्येक राज्य/स्थान के संदर्भ में

7. **उत्तर भारत एवं पूर्वोत्तर भारत की राम कथा एवं कलाओं का तुलनात्मक विवेचन**
8. **वर्तमान परिदृश्य में रामकथा की प्रासंगिकता**
9. **पूर्वोत्तर भारत के संदर्भ में रामलीला के विविध रूप**
10. **मानवीय मूल्य एवं मर्यादा के परिपेक्ष्य में राम**
11. **आदर्श समाज की संकल्पना में राम**

इनके अलावा संबंधित अन्य उपविषयों पर भी हिन्दी, बांग्ला, कॉकबरक एवं अंग्रेजी में लिखित आलेखों का स्वागत है।

नोट-
*त्रिपुरा के विभिन्न स्थानों पर जाकर फील्डवर्क आदि करके चित्र/वीडियो आदि के साथ जमा किए गए शोधालेखों के लेखकों को सामग्री-संकलन के दौरान आने जाने का किराया देय होगा।
*सम्पादन समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ शोधालेखों को विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा।
*संपादन-समिति द्वारा स्वीकृत लेखों को वाणी प्रकाशन, दिल्ली की ओर से पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाएगा।

प्रस्तोताओं (Paper presenters) के लिए रजिस्ट्रेशन-शुल्क निम्नवत है-

छात्रों एवं शोधार्थियों के लिए- ₹ 500 /-

शिक्षकों एवं अधिकारियों के लिए- ₹ 700 /-

संगोष्ठी-संयोजक

डॉ. मिलन रानी जमातिया
हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
सूर्यमणिनगर, अगरतला, त्रिपुरा-799022
मो.- 8974009245
ईमेल- milanrani08@gmail.com